

राष्ट्रोपनिषत्-प्रस्तावना-शतकम्

रचयिता

आचार्य डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर विद्यालङ्कार
(महामहिम-राष्ट्रपति-सम्मानित)

हिन्दी-रूपान्तरण-कर्त्री
सौ. श्रीमती इन्दु शर्मा
एम.ए., शिक्षाचार्या

अंग्रेजी-रूपान्तरण-कर्ता
महामण्डलेश्वर स्वामी श्री ज्ञानेश्वरपुरी
विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान, जयपुर

(गताङ्कादग्रे) इहेदमेव प्रमाणं, यदीदृश - घोरापराधे दण्डितो हि ।

न कदापि क्वचिदपि च स, दृष्टः श्रुतः पठितो वा प्रशासनेन ॥57॥

इसमें यही प्रत्यक्ष प्रमाण है, कि ऐसे घोर अपराध में प्रशासन के द्वारा दण्डित किया गया वह कहीं भी कभी न देखा गया है, न सुना गया अथवा पढ़ा ही गया है।

The proof of this statement is that it was never heard or written anywhere about administration punishing such a person.

ईदृशापराधेषु तु, प्राप्ताद्यतन - शिक्षा एव लिप्ताः ।

अधिकतरमीक्ष्यन्तेऽत्र, प्रमाणं च वृत्तवार्त्ता-पत्राणि ॥58॥

ऐसे अपराधों में तो आजकल की शिक्षा प्राप्त किए हुए ही व्यक्ति लिप्त अधिकतर यहाँ देखे जाते हैं। इसमें समाचार - पत्र प्रमाण हैं।

Today educated people are completely immersed in such crimes, as witnessed by the news.

सत्संस्काराँस्तु नैव, जनयितुं प्रभविष्णुरद्यतन - शिक्षाऽस्ति ।

अतो हि नानोत्पाता, उत्पद्य जनतां प्रशासनं च तुदन्ति ॥59॥

आजकल की शिक्षा उत्तम संस्कारों को उत्पन्न करने में समर्थ नहीं है। इसीलिए नाना उत्पात उत्पन्न होकर जनता और प्रशासन को उत्पीड़ित करते रहते हैं।

Today's education is not capable of giving the highest values (in life). Therefore, various disasters are created that are troubling people and the administration.

नेयं काचन नवता , यादृशमुप्यते बीजं तादृशमेव ।

प्राप्यतेऽत्रावश्यं हि, फलमिति प्राकृतिकोऽयं सुदृढो नियमः ॥60॥

यह कोई नई बात नहीं है, जैसा बीज बोया जाता है वैसा ही फल अवश्य ही यहाँ प्राप्त किया जाता है ।
यह तो प्रकृति का सुदृढ नियम है।

This is nothing new. As we saw we reap, is a natural order of things. [60] (or should we put longer version – As the seeds, we plant such will be the fruits. That is a strong principle of nature.)

गुरुदेव ! कां वदाम, विकृतिमापन्नां स्वराष्ट्रियां दशाम् ? ।

दर्शं दर्शमेतां तु , दोदूयत एव हृदयमस्माकम् ॥61॥

हे गुरुदेव ! विकार को प्राप्त हुए हमारे राष्ट्र की दशा को क्या बताएँ ? इसको देख देख कर तो हमारा हृदय बहुत बहुत ही सन्तप्त होता है।

Oh, Gurudev! What will be with our nation? Our hearts suffer a lot, seeing these disorders.

यत्रेक्ष्येत तत्रैव, सुखं शान्तिः समृद्धिर्न लभ्यते ।

तदाप्त्यै कृत-यत्नास्तु, सफलाः स्थिर-रूपेण भवन्त्येव न ॥62॥

जहाँ देखा जाए वहाँ ही सुख शान्ति समृद्धि नहीं प्राप्त की जाती है । उनकी प्राप्ति के लिए किये गये प्रयत्न तो स्थिर रूप से सफल होते ही नहीं हैं।

Wherever we look at happiness, peace and wealth cannot be achieved. All efforts to achieve them are wasted.

सर्वेऽपीह स्वार्थान् , साधयितुं संलग्ना अवलोक्यन्ते ।

मिथ उपविश्य वार्त्ता तु कर्तुं सप्रेम कश्चिद् चिन्तयत्येव न ॥63॥

यहाँ सभी स्वार्थों को साधने में संलग्न देखे जाते हैं। अपस में बैठकर प्रेम के साथ बात करने की तो कोई सोचता ही नहीं है।

Here all are engaged in selfish deeds/work. Engrossed/immersed in crime, nobody even thinks to talk with love.

(क्रमशः)